Raga of the Month January, 2021

रागांग बिलावल

राग बिलावल, जिसका उल्लेख पुराने ग्रंथोंमें "बेलावली " नामसे किया गया है , एक प्राचीन राग है। कर्नाटक पद्धतिमें शुद्ध स्वरोंके इस स्वरूपको शंकराभरण मेलकर्ता कहते हैं। बिलावलका शुद्ध स्वरूप (जिसे सुबहका कल्याण माना जाता है) अब प्रचारमें नही। सभी लोग अल्हैया बिलावलकोही बिलावल थाटका प्रमुख और रागांग वाचक राग मानते हैं। अल्हैया बिलावलके और उसीके साथ बिलावल रागांगके विशेष हम अभी देखेंगे।
आरोह - सा, रे, ग रे, ग प, ध, नि ध, नि सां; अवरोह - सां , नि ध प, ध नि ध प, म ग , म रे, सा;
पकड - ग रे, ग प, ध, नि सां; जाती - वक्र संपूर्ण; वादी - ध , संवादी - ग, गानसमय - दिनका प्रथम प्रहर।

विशेष स्वर समूह- ग रे, ग प, म ग, म रे, सा; प नि ध नि ; सां ध प म ग; प ध ग प म ग ; ग म नि ध प; सां ध नि प; ध नि ध प.

स्वरों का प्रयोग एवं महत्व

रे - अनाभ्यास तथा लंघन अल्पत्व
ग - संवादी, पूर्वाङ्गका महत्वपूर्ण स्वर, न्यास बहुत्व ; म ग म रे इस स्वरसंगतीमे वक्र प्रयोग ;
म - आरोह- अवरोह में अनाभ्यास अल्पत्व ; आरोहमे प्रायः अल्प प्रयोग ; तथा अवरोहमे दीर्घ प्रयोग होता है;
प - पूर्ण न्यास बहुत्व ;
ध - वादी होनेपरभी धैवतपर न्यास नही किया जाता है; दीर्घत्व तथा अभ्यास बहुत्व;
कोमल निषाद - विवादीके नाते अल्प प्रयोग;
शुद्ध निषाद - न्यास बहुत्व और अभ्यास बहुत्व; कभी कभी आरोह और अवरोहमे लंघन किया जाता है।

पंडित भातखण्डेजीने बिलावलके आठ प्रकारोंका वर्णन किया है- अल्हैया बिलावल, यमनीबिलावल, कुकुभबिलावल, शुक्लबिलावल, लच्छासाखबिलावल, सरपरदाबिलावल, देवगिरिबिलावल और नटबिलावल।

बिलावल थाटमे अन्य बहुत राग समाविष्ट किये हैं; जैसे की, मांड , दुर्गा, बिहाग, देशकार, नट, शंकरा,पहाड़ी, हंसध्वनी, गुणकली (बिलावल थाट), हेमकल्याण,मलुहा जो केदारका प्रकार समझा जाता है। ये सभी राग अपना अपना स्वतंत्र स्वरूप रखते हैं।

गये कुछ दशकोंमे कई संगीतज्ञोंने बिलावलके नये प्रकारोंका सृजन किया है; जिनके नाम हैं - बंगालबिलावल, भूपबिलावल, चम्पकबिलावल, गौड़बिलावल, हमीरीबिलावल, जैजबिलावल, कल्याणीबिलावल, खंबलबिलावल, नारायणीबिलावल, सावनीबिलावल, सुखियाबिलावल। उपरोक्त सभी रागों के गायनके नमूने www.oceanofragas.com संकेत स्थलपर उपलब्ध है।

आज हम गायनके तीन अंश सुनेंगे (i) राग शुद्ध बिलावलमे वाग्गेयकार आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजीने बारह बरसकी उम्रमे जीवनीकी पहली बंदिश " मुरली बजावे मोहन " रची थी, जो पंडित के जी गिंडेजीने लेक्चर डेमोमे गायी हुई है; तथा (ii) उस्ताद अब्दुल करीम खांकी गायी हुई बंदिश " प्यारा नजर नहीं आवेगा " जिसमे राग शुद्ध बिलावलकी झलक देखनेको मिलती है; और (iii) पंडित गोविन्दराव शालिग्रामके शिष्य पंडित आनंदराव लिमयेजीने एक कॉन्सर्टमे गाया हुआ राग नट बिलावल सुनेंगे, "कितुवे गये लोग भइलवा दुख पावे"; यह बंदिश उनके दादागुरू उस्ताद अल्लादियाखांने अपने पुत्र मंजी खांके निधनके बाद पुत्र निधनके शोकमे रची थी।

{ आभार प्रदर्शन - क्रमिक पुस्तक मालिका और संगीत शास्त्र; अभिनव गीतांजली -पं रामाश्रेय झा, श्री अजय गिंडे , पं . यशवंत महाले, श्री श्रीकांत डिग्रजकर }

०१-०१-२०२१